पाठ - 20

मुहम्मद ﷺ के बारे में ग़ैर मुस्लिमों के कथन

الدرس العشرون - هندي
قالوا عن محمد ﷺ

नीचे की पंक्तियों में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कुछ दार्शनिकों और पश्चिमी स्कालरों के कुछ कथन बयान किए जा रहे हैं जिनसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महानता, आपकी नुबुवत, उमदा खूबियां और आपकी लाई हुई शरीअत की हक़ीकत के ऐतिराफ़ का पता चलता है। इसमें उन खुराफ़ात का कोई अंश भी नहीं जिन्हें इस्लाम दुश्मनों ने फैला रखा है।

प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक बरनाडशा अपनी प्रख्यात किताब ''मुहम्मद जिसे अंग्रेजी हुकूमत ने जला डाला था, में कहता है: ''आज दुनिया को मुहम्मद की फिक्र विचारों के हामिल इन्सान की ज़रूरत है जिन्होंने अपने दीन को हमेशा दूसरों की निगाह में सम्मान योग्य बना के रखा। यह दीन तमाम सभ्यताओं को हज़म करने की सबसे अधिक कुदरत रखता है। यह सदैव बाक़ी रहने वाला दीन है। मैंने अपनी क़ौम के बहुत से लोगों को देखा कि वे दलीलों के आधार पर इस दीन में दाखिल हुए और शीघ्र ही यह दीन यूरोप में बड़े पैमाने पर जगह पाएगा।

उसने आगे लिखा: ''मध्य युग में विभिन्न दीनी हस्तियों ने जिहालत और तास्सुब के कारण दीने मुहम्मदी की ग़लत तस्वीर पेश की। वे इस दीन को मसीहियत का विरोधी माना करते थे लेकिन मैंने इस व्यक्ति के बारे में जानकारी हासिल की तो बड़ी विचित्र चीज़ें मालूम हुईं। मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि यह व्यक्ति मसीहियत विरोधी नहीं था बल्कि सच्ची बात यह है कि इसे मानवता का मुहाफ़िज़ कहा जाए। मेरा ख्याल है कि यदि आज उसे दुनिया की हुकूमत हासिल हो जाए तो वह हमारी मुश्किलात को ऐसे उसूलों के ज़रिए हल करने में कामयाब हो जाएगा जो सौभाग्य व सलामती की ज़मानत हैं।

प्रसिद्ध नोबेल इनाम विजेता अंग्रेज फ़लसफ़ी थामस कार लायल अपनी किताब अल इबताल में लिखता है: ''इस ज़माने में किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी शर्म की बात यह हो गयी है कि उन लोगों की बातों पर कान धरे जो कहते हैं कि दीन इस्लाम झूठा है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम झूठे हैं और धोखे बाज़ हैं।

इस प्रकार की जो घटिया और रुसवा कुन बातें फैलाई जाती हैं ज़रूरी है कि हम उनके खिलाफ़ जंग छेड़ें, क्योंकि उस नबी ने जो संदेश पहुंचाया है वह बारह सदियों तक लग भग बीस करोड़ लोगों के लिए रौशन चिराग़ बना रहा । क्या कोई यह समझ सकता है कि ये करोड़ों लोग जिन्होंने इस पैग़ाम के तहत ज़िन्दगी गुज़ारी और इसी पर वफ़ात पा गए वे सभी झूठ के शिकार और फ़रेब खाए हुए थे?

हिन्दू फलसफ़ी राम कृष्ण राय कहता है: ''जिस समय मुहम्मद प्रकट हुए, अरब का टापू उल्लेखनीय नहीं था। इसी क्षेत्र से मुहम्मद ने अपनी महान आत्मा की बुनियाद पर एक नयी दुनिया, आधुनिक जीवन, सभ्यता एवं संस्कृति और नयी हुकूमत स्थापित की जो मराकश से हिन्द व पाक तक फैली हुई थी। उसने तीन महाद्वीपों के विचार व जीवन पर प्रभाव डाला अर्थात ऐशिया, अफ्रीक़ा और यूरोप पर

मुश्तष्रिक कैन्डी ज़्वेमर कहता हैः ''मुहम्मद निःसन्देह महानतम धार्मिक कायदीन में थे। उन पर यह बात सादिक़ आती है कि वे शक्ति शाली, सुधारक, भाषाविद विजय हासिल करने वाले साहसी और महान विचारक थे। यह बात सही नहीं है कि हम उनकी ज़ात की ओर ऐसी चीज़ों को जोड़ दें जो उनकी खूबियों के विरोधी हों। वे जो कुछ लेकर आए, उनमें हमने उसी चीज़ को पढ़ा है और उसकी सीरत भी उसी चीज़ की गवाही देती है।

अंग्रेज़ सर विलियम कहता हैः ''मुसलमानों के नबी मुहम्मद अपने अखलाक़ की बेहतरी और व्यवहार की अच्छाई की वजह से बचपन ही से तमाम शहर वालों के निकट सहमति से अमीन के लक़ब से पुकारे गए। बात चाहे जो भी हो मुहम्मद इस बात से उच्च हैं कि खूबियां बताने वाले उनको पहचान सकें और उनके बारे में न जानने वाला व्यक्ति उनके मूल्य व सम्मान को नहीं पहचान सकता है। उनके बारे में जानकार वह है जिसने उनकी रौशन तारीख पर सोच विचार किया हो जिस तारीख को मुहम्मद ने रसूलों और विचारकों के पेशवा के तौर पर छोड़ा है।

वह आगे कहता हैः ''मुहम्मद अपने वाजह कलाम और आसान दीन की वजह से मुमताज़ हैं। उन्होंने ऐसे कारनामे अंजाम दिए हैं कि अक़्लें हैरान हैं और तारीख ने ऐसे किसी सुधारक को नहीं देखा है जिसने लोगों को जगा दिया हो और अखलाक़ को ज़िन्दा कर दिया हो और कम ही समय में भले कामों की महानता को स्पष्ट कर दिया हो जैसा कि इस्लाम के नबी मुहम्मद ने किया है।

प्रसिद्ध रूसी फलसफ़ी और नाविल निगार टालस्टाय कहता हैः ''मुहम्मद के गर्व के लिए इतनी ही बात काफ़ी है कि उसने ज़लील झगड़ालू क़ौम को बुरी आदतों के शैतानी चंगुल से नजात दिलायी और उनके सामने तरक़्क़ी और आगे बढ़ने की राह खोल दी। एक दिन मुहम्मद का दीन अक़्ल व हिक्मत के अनुसार होने की वजह से दुनिया पर छा जाएगा।

आस्टीरिया का नागरकि शबरक कहता हैः ''इन्सानियत को मुहम्मद जैसे इन्सान की ओर निसबत पर गर्व है क्यों कि वह अनपढ़ होने के बावजूद लगभग दस सदी पहले एक शरीअत लाए। हम यूरोप वाले उस दिन को बड़ा ही भाग्यवान महसूस करेंगे जबकि उसकी बुलन्द चोटी पर पहुंच जाएंगे।